जानू तुम जान हो मेरी

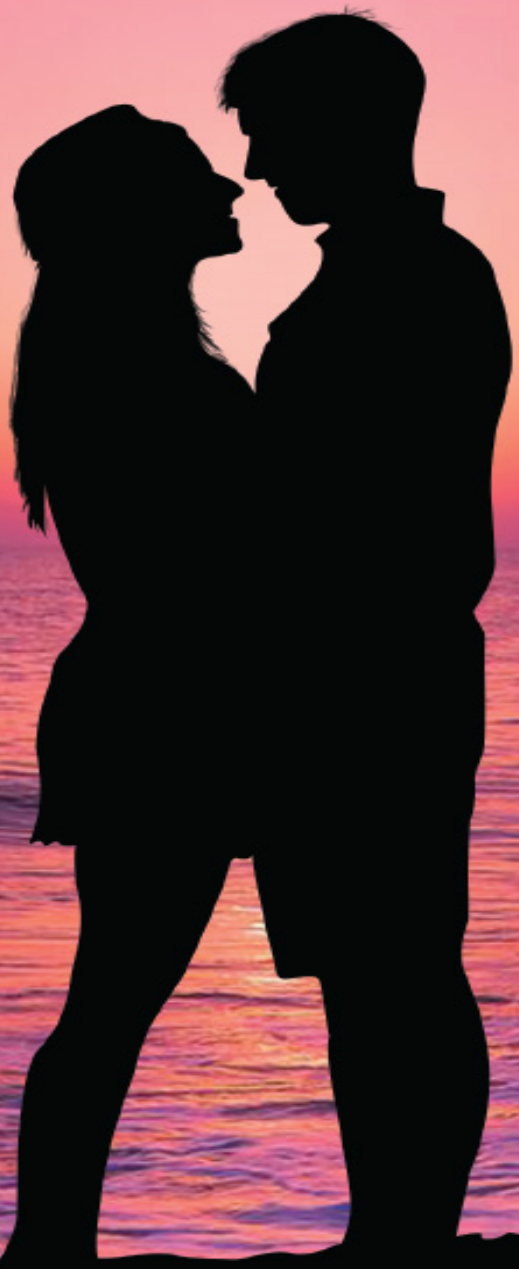

अभिषेक कुमार

Copyright © 2019, Abhishek Kumar
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-1-5457-5081-0
eISBN: 978-81-944495-4-6

Library of Congress Cataloging in Publication

अंतर्वस्तु

अभिस्वीकृति

प्रस्तावना

अभिस्वीकृति

धन्यवाद, मेरे प्रिय पाठकों मेरी किताब को चुनने और राघव के भावनात्मक और सुन्दर जीवन के माध्यम से आपको मनोरंजन करने के लिए और मेरे जैसे एक नए लेखक को मौका देने के लिए। मैं अपने परिवार, दोस्तों, और शुभचिंतकों को इस किताब को लिखने की मेरी इस यात्रा में उनके नैतिक और भावनात्मक समर्थन के लिए धन्यवाद देता हूँ।

और धन्यवाद करता हूँ उनको जो मेरी इस किताब की पहली पाठक हैं श्रीमती दिव्यानंदगोपाल। इस किताब को पूरा करने के हर एक कदम पर उन्होंने मेरा साथ दिया।

मेरी माँ जो शारीरिक रूप से मेरे साथ नहीं हैं, लेकिन मुझे यकीन है की वो जहाँ भी हैं उनका आशीर्वाद और उनकी शुभकामनाएँ हमेशा मेरे साथ हैं, जिनकी वजह से आज मैं अपने इस सपने को पूरा कर सका।

और मैं अपनी प्रेरणा श्री चेतन भगत को धन्यवाद देता हूँ। जिनकी किताबों ने मुझे अपने इस सपने को पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

और आखिरी पर किसी से कम नहीं, मैं अपने प्रकाशक प्रोवेस और उनकी टीम को धन्यवाद देता हूँ की उन्होंने मुझ पर और मेरी इस किताब पर विश् वास किया, और मेरी किताब को मेरे प्रिय पाठकों के लिए उपलब्ध कराया। मैं अपने जीवन में यह सब संभव होने के लिए भगवान का धन्यवाद करता हूँ।

और मैं अपने प्रिय पाठकों को यह विश् वास दिलाता हूँ की आगे भी इसी प्रकार मैं उन्हें अपनी कहानियों द्वारा मनोरंजित करता रहूँगा। जब तक आप सबका प्यार है तब तक मैं हूँ। आप सबके बिना मैं कुछ भी नहीं, अपना प्यार इसी तरह हमेशा मुझे और मेरी कहानियों को देते रहें।

“जानू तुम जान हो मेरी” में आपका स्वागत है।

प्रस्तावना

खुदा ने लाख बनाया पर,
अनमोल सिर्फ आपको बनाया,
आँखें नूर सी तो,
होठों को गुलाब सा बनाया,
कुदरत भी सर झुकाती है आपको देखकर,
कोयल भी चुप हो जाती है आपकी आवाज़ सुनकर!!!

मोहब्बत, चाहत, प्यार दिल के वो जज़बात हैं जो महसूस किये जा सकते हैं पर किसीको सिखाए या समझाए नहीं जा सकते। दिल के यही जज़बात हमें जीवन के सही मायने सिखाते हैं। यही वो अनमोल जज़बात हैं जिनपर मेरी कहानी आधारित है।

मोहब्बत तो सबको हो जाती है पर उसको निभाना आसान नहीं होता। कई रुकावटें, कई मुश्किलें आती हैं। उन मुश्किलों को पार करना और अपने प्यार को हासिल करना हर किसी से नहीं होता। पर दिल में सच्चा प्यार हो तो इन मुश्किलों का दरिया भी पार हो जाता है।

कुछ ऐसी ही प्यार की सच्चाई है मेरी कहानी के नायक राघव में। कॉलेज में शुरू हुई ये प्रेम कहानी, कई उतर चढाव से गुज़री कई नए मोड़ आए पर क्या राघव जीत पाया अपना प्यार? क्या उसे हासिल हुआ अपना प्यार? तो आइये पढ़ते हैं "जानू तुम जान हो मेरी" और जानते हैं इस कहानी को और भी गहराई से।

राघव किसी ने आवाज लगाई जब मैं अपनी बाइक पर दूकान जा रहा था। कुछ दूरी पर मैंने अपनी बाइक रोकी और पीछे मुड़कर देखा। एक चाय की दूकान पर आदित्या खड़ा था। मैंने अपनी बाईक रोकी और उतरकर उसके पास गया और उसके गले से लग गया।

यार कितने दिनों बाद मिल रहे हैं। (उसने कहा)

हाँ यार क्या करें वक्त ही नहीं मिलता है किसी से मिलने के लिए।

आदित्या मेरे बचपन का दोस्त था। हम दोनों साथ में तो नहीं पढ़े हैं लेकिन हम दोनों हमेशा साथ थे। बचपन में साथ खेलना वो छोटी-छोटी बातों पर लड़ाई एक दूसरे से नाराज हो जाना और फिर से दोस्त बन जाना।

एक अलग सा रिस्ता बन गया था मेरा आदित्या के साथ वो मेरा अपना भाई तो नहीं था पर भाई से कम भी नहीं था।

अपनी हर बात उसे बताता था। किसी और से कहूँ या ना, पर आदि ही था। जो मेरी हर बात जानता था।

मेरे जीवन की पूरी किताब पढ़ी थी उसने पर उस किताब के कुछ पन्ने आज भी उससे छुपे थे।

राघव किन ख्यालों में खो गये? (उसने पूछा)

कुछ नहीं यार तेरे साथ जो वक्त गुजारे, जो लम्हे थे वो सारे अचानक से याद आ रहे हैं।

इतने दिनों बाद जो मिले हैं। चल साथ में थोड़ी चाय की चुस्कि हो जाए।

चल फिर। (मैंने कहा)

हम दोनों एक लकड़ी के स्टूल पर बैठे और जब तक चाय तैयार हो रही थी तब तक थोड़ो

गप्पे लड़ाने लगें।

वैसे आजकल कर क्या रहा है? (आदि ने पूछा)

एक कंपनी ने मुझे सी एस का ऑफर दिया था चैन्नई में, तो अभी वहीं पर काम कर रहा हूँ।

तभी हमारी चाय भी आ गई। क्या दिन थे कांच के प्याले में वो गरमा गरम चाय वो भी दोस्त के साथ। एसी चीजों को कह कर या लिखकर नहीं जान सकते हैं इनका अनुभव खुद करना चाहिए।

बातों बातों में हमने चाय की चुस्की लगाई और मैंने आदि से पूछा वैसे तुम क्या कर रहे हो?

फिलहाल झख मार रहा हूँ घर पर बैठ कर।

क्यों भाई? (मैंने पूछा)

इंटरव्यू के लिए दो कंपनीयों ने बुलाया है। देखते हैं क्या होगा?

तू फिक्र ना कर।

अच्छा सुन तू आज फ्री है? (उसने चाय का प्याला नीचे रखकर पूछा)

हाँ। क्यूँ?

ठीक है फिर शाम को घर पर मिलते हैं। मुझे थोड़ा आर.टी.ओ ऑफिस में काम है।

वैसे किसके घर और कितने बजे?

शाम चार बजे मेरे घर पर।

चल ठिक है।

हम दोनों ने हाथ मिलाया एक दूसरे के गले लगे और चले गए।

जाने से पहले।

चाचा, चाय अच्छी थी। (मैंने कहा और चाय के पैसे दिये)

फिर आना बेटा।

जरूर चाचा, अच्छा चलता हूँ।

जीवन में कुछ हो या ना हो पर दोस्तो की कमी नहीं होनी चाहिए। एक दोस्त ही तो होते हैं जो हमें, हमारी भावनाओं को अच्छे से समझते हैं। मैँ ये नहीं कह रहा कि जीवन का सब कुछ दोस्त ही है पर जीवन में दोस्त नही तो फिर क्या जीना यारों।

आदि मेरे लिए कुछ ऐसा ही था।

कहते हैं ना खाने में सब कुछ है पर आचार नहीं तो खाना फिका सा लगता है उसी तरह जीवन में दोस्त नहीं तो जीवन फिका सा लगता है।

मेरे जीवन में मेरे दोस्त ही तो थे जो मेरी जीवन को चटपटा बनाकर रखा।

आज तक उसी दोस्त से अपने जीवन का सबसे बड़ा सच छूपा रहा हूँ। छूपा राहा था क्या छूपा राहा हूँ।

शाम चार बजे।

मैं आदि के घर के लिए निकला। मौसम कुछ अजीब सा हो रहा था। तेज हवाएं चल रही थीं और बादल भी गरजने लगे। मैंने सोचा बारिश आने वाली है इसलिए तेजी से अपनी बाइक चलाने लगा पर किसे पता था सिर्फ बारिश ही नहीं साथ में तूफान भी आने वाला था।

आदि का घर मुझे दूर से ही दिख रहा था आज भी कुछ नहीं बदला था बस आस पास के पेड़ थोड़े बड़े हो गए थें।

मैं घर के पास पहूँचा और अपनी बाइक को एक पेड़ के नीचे खड़ा कर दिया और अंदर गया।

बाहर से तो घर ठिक था पर अंदर एक बदंर था आदि जिसने पूरा घर कुड़ेदान बनाकर रखा था ना कोई बत्ती जल रही थी ना कुछ घर में पूरा अंधेरा था। सारे कपड़े यहाँ वहाँ पूरा सोफा तो कपड़ों से ढ़का हुआ था।

आदि। (मैंने जोर से आवाज लगाई)

हाँ आ रहा हूँ। (रसोई घर से आवाज आई उसकी)

मैं रसोईघर में गया और देखा की ये जनाब पॉपकॉर्न बना रहे थें।

नीचे तौलिया लपेटे खड़ा था।

हम दोनों गले लगें और फिर वो अपनी पॉपकॉर्न के पास चला गया।

अबे तू नंगा कर क्या रहा है?

नंगा कहाँ हूँ मैं? तौलिया तो लपेटा है ना मैंने।

और इसे निकाल दूँ तो।

साले मार खाएगा फिर तू मुझसे। अच्छा सुन मैं बाहर सोफा पर बैठा हूँ। जल्दी से अपना ये पॉपकॉर्न लेकर आ।

तू चल मैं अभी आया।

मैं रसोईघर से बाहर आकर सोफा पर बैठ गया। तभी मैंने टी.वी के पास रखे तस्वीर को देखा जिसमे आदि के मम्मी पापा थे और देखते ही मैंने आदि से पूछा आदि मम्मी पापा कहाँ हैं?

वो तो अभी हाल ही में गाँव गए है। (उसने कहा)

वो उनकी शादी की तस्वीर थी। मैंने उस तस्वीर को हाथ में लिया उसपर थोड़ी धूल ज़मी थी मैंने उसे साफ़ कर के वापस उसी जगह उसे रख दिया।

तभी आदि रसोईघर से बाहर आया और आते ही टी.वी चालू कर दिया।

क्या यार मम्मी घर पर नही हैं तो पूरे घर की क्या हालत बनाकर रख दी है तूने।

कभी साफ कर लिया कर।

ठिक है कर लूँगा। तू आ बैठ मेरे साथ। (उसने पॉपकॉर्न खाकर मुझे सोफा पर बैठने के लिये इशारा किया)

मैं उसके पास जाकर सोफा पर बैठ गया।

पॉपकॉर्न? (उसने मेरे सामने पॉपकॉर्न दिखाकर पूछा)

नहीं यार खाने का मन नही है कुछ पीने के लिये है तो लाना?

रूक अभी लाया। (उसने पॉपकॉर्न सोफा पर रखा और रसोईघर की और चला गया)

तभी दरवाजे की घंटी बजी मुझे लगा आदि ने किसी और को भी बुलाया है। मैं ज़मीन पर

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com